भारत सरकार
पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय
लोक सभा
अतारांकित प्रश्न सं. 2862
बुधवार, 15 दिसम्बर, 2021 को उत्तर दिए जाने के लिए

हिमालयी क्षेत्र के संबंध में अध्ययन

2862. श्री नलीन कुमार कटील:

क्या पृथ्वी विज्ञान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) क्या वैज्ञानिकों ने हाल ही में यह पाया है कि लगभग 20,000 वर्ष पहले हिमालय के एक बड़े हिमनद ने अचानक अपना मार्ग बदल लिया था और समय के साथ वह वर्तमान में उत्तराखंड के पिथौरागढ़ में निकटवर्ती हिमनद में मिल गया था;
(ख) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;
(ग) क्या हिमालयी क्षेत्र विश्व की सबसे नवीनतम पर्वत श्रृंखलाओं में से एक है, जिसके कारण सहायक अंतर्निहित टेक्टोनिक प्लेट स्थिर नहीं हैं और अक्सर भूकंप तथा भूस्खलन का कारण बनते हैं;
(घ) यदि हां, तो क्या सरकार का हिमालयी क्षेत्र में बार-बार होने वाली प्राकृतिक आपदाओं का समाधान खोजने के लिए अनुसंधान और अध्ययन को प्रोत्साहन देने का विचार है; और
(ड.) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

उत्तर
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा पृथ्वी विज्ञान राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
(डॉ. जितेंद्र सिंह)

(क) जी हाँ।
(ख) वाडिया हिमालय भूविज्ञान संस्थान के वैज्ञानिकों ने उत्तराखंड हिमालय के पिथौरागढ़ जिले की ऊपरी काली गंगा घाटी में ग्लेशियरों का अध्ययन करते हुए पाया कि 5 किमी लंबा अज्ञात ग्लेशियर (30.28089 उ.- 80.69344 पू.), जो कुठी यांकती घाटी (काली नदी की सहायक नदी) में ~ 4 वर्ग किमी के क्षेत्र को कवर करता है, ने अपना मुख्य मार्ग बदल दिया और अंतिम हिमनद मैक्सिमा (19-24,000 वर्ष पहले) और होलोसीन (10,000 वर्ष पहले) के बीच किसी समय जलवायु और विवर्तनिक बल में परिवर्तन के कारण अचानक समजुर्कचांकी नामक एक निकटवर्ती ग्लेशियर के साथ मिल गया।
(ग) जी हाँ।
(घ) जी हाँ। सरकार, बार-बार आने वाली प्राकृतिक आपदाओं के समाधान खोजने के लिए हिमालयी क्षेत्र में अनुसंधान और अध्ययन को प्रोत्साहित करती है।
(ङ) सरकार अनेक अनुसंधान संस्थानों, विश्वविद्यालयों, आईआईटी, आईआईएससी, आदि द्वारा हिमालयी क्षेत्र में प्राकृतिक आपदाओं पर अनुसंधान को प्रोत्साहित करती है। पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय अपने भूकंपविज्ञान केंद्र के माध्यम से विशेष रूप से हिमालयी क्षेत्र की भूकंप प्रक्रियाओं और भूकंपीय खतरे के आकलन से संबंधित विभिन्न घटनाओं को समझने के लिए रिकॉर्ड किए गए भूकंप डेटा का उपयोग करके अनुसंधान करने में शामिल है। वाडिया हिमालय भूविज्ञान संस्थान हिमालय में भूकंप, भूस्खलन और हिमस्खलन के कारणों और परिणामों को समझने के लिए शोध कर रहा है ताकि शमन के उपाय किए जा सकें।

*****